ISSN 0975-735X

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

54

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

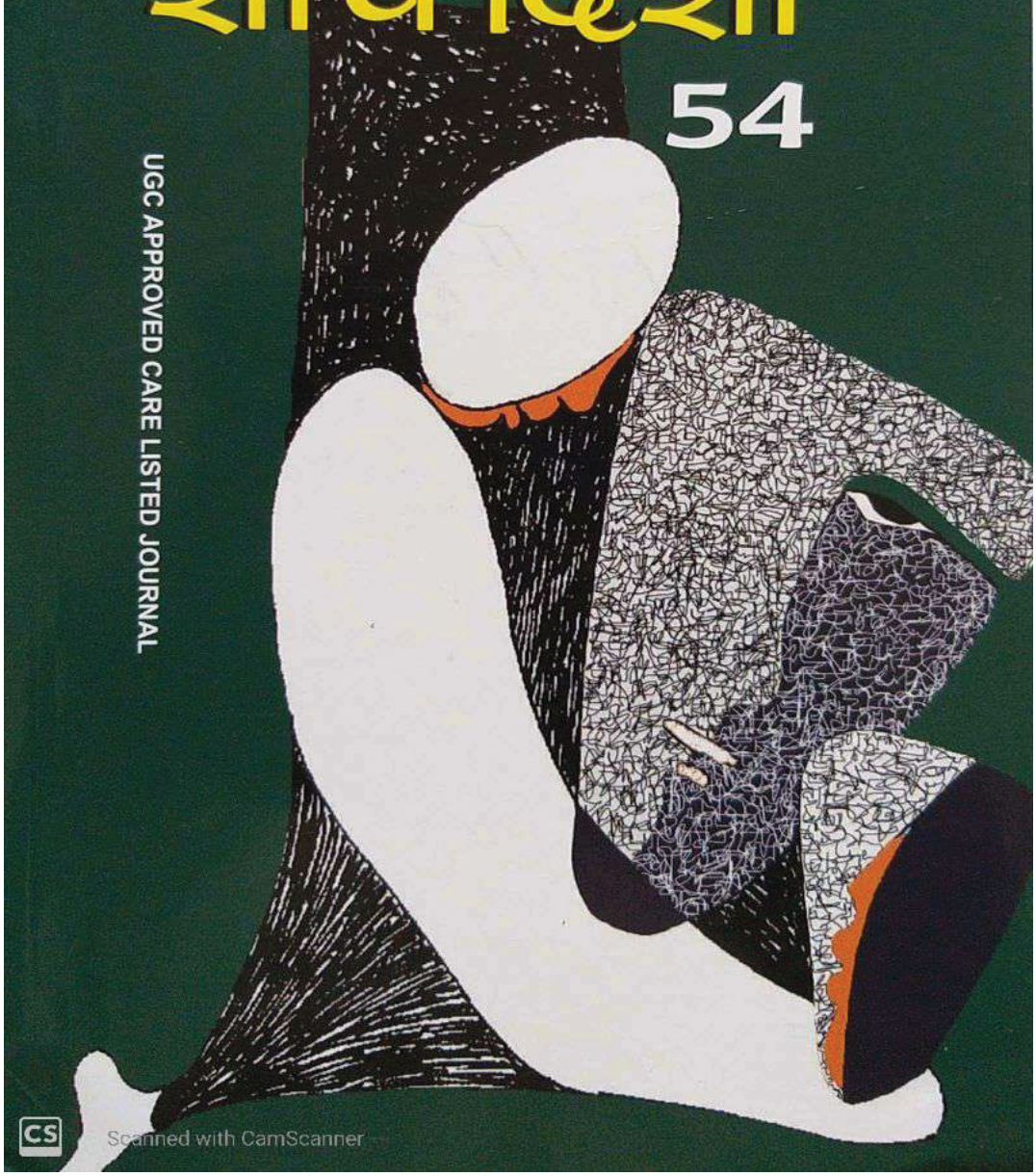

Scanned with CamScanner

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 54/2 | अप्रैल-जून 2021 | 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

Scanned with CamScanner

निरुपमा बरगोहाई और मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारीवाद/ **सुमि शर्मा** 132
नरेंद्र कोहली एवं उनकी साहित्य-साधना/ **प्रतिभा** 139
असम की राभा जनजाति : एक अवलोकन/ **डॉ॰ राजकुमारी दास** 151
आधारभूत संरचना के विकास में बजट 2021 का योगदान/ **डॉ॰ राजेंद्र कुमार** 155
मानवाधिकार का अर्थ एवं महत्त्व/ **पूजा** 161
मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण स्त्री का संघर्ष/ **डॉ॰ बिजेन्द्र कुमार** 165
ज्ञानप्रकाश विवेक के साहित्य में आधुनिक युगबोध/ **नीरू रानी, डॉ॰ कामराज सिंधु** 171
बालश्रम और कानूनी अधिकार/ **वंदना** 174
बौद्ध पालि साहित्य में वर्णित महात्मा बुद्ध का कृषिविषयक दृष्टिकोण/ **डॉ॰ प्रशांत कुमार, डॉ॰ अजीत कुमार राव** 177
मानवीय चेतना पर दस्तक देते कुसुम अंसल के नारीपात्र/ **डॉ॰ विक्रम सिंह, डॉ॰ सुनीता** 183
धरती से जुड़े कवि : भगवतीलाल व्यास/ **डॉ॰ नीतू परिहार** 187
अलका सरावगी के कथासाहित्य में सामाजिक परिदृश्य/ **दिनेशचंद्र भट्ट** 192
परिसर बादशाहीथौल टिहरी परिसर, गढ़वाल/ **प्रो॰ कुसुम डोभाल मिश्र** 192
प्रसाद के नाटकों के पात्रों में अंतर्द्वंद्व/ **डॉ॰ वीना सोनी** 196
कोविड-19 के दौरान ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियाँ एवं समाधान/ **अशोक कुमार, डॉ॰ सुधीर मलिक** 202
लघुकथाओं का सुंदर गुलदस्ता : आस्था के फूल/ **प्रो॰ नीरू** 206
मुरैना के ककनमठ मंदिर में अंकित दिक्पाल देवता इंद्र का प्रतिमाशास्त्रीय स्वरूप/ **प्रो॰ प्रभात कुमार, गौरव सिंह** 211
श्रीकृष्णचंद्रिका : एक अद्भुत रचना/ **डॉ॰ निर्भय शर्मा** 216
संत कबीर का समाजदर्शन/ **डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता** 221
भारतीय धर्म (संस्कृति) और अंबेडकर की दृष्टि/ **उमेश कुमार** 227
कोरोना महामारी के परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के समाज सुधारक रूप की उपादेयता/ **डॉ॰ नवनाथ गाड़ेकर/** 232
समकालीन हिंदी कविता में अंबेडकरवादी चिंतन, **डॉ॰ संजय नाईनवाड़** 238
'उर्वशी' काव्य में चित्रित कामाध्यात्म का दर्शन : वर्तमान संदर्भ/ **रमेशचंद सैनी** 244
आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मनोविकार संबंधी निबंधों की सामाजिक दृष्टि/ **सैफ रजा खान** 249
काशी का अस्सी : सारांशिक रूप/ **नेहा गुप्ता** 254
सुनीता जैन द्वारा लिखित उपन्यास 'मरणातीत' : एक विश्लेषण/ **नीलम देवी** 258
मानवीय संवेदनाओं का अभाव : हृदयेश कृत 'हत्या' उपन्यास के विशेष संदर्भ में/ **ज्योतिदेवी, डॉ॰ सुधारानी सिंह** 263

ISSN 0975-735X

Scanned with CamScanner

समकालीन हिंदी कविता में अंबेडकरवादी चिंतन

डॉ॰ संजय नाईनवाड
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
एस॰बी॰ झाड़बुके महाविद्यालय, बार्शी
तहसील-बार्शी (सोलापुर)

भारतरत्न डॉ॰ भीमराव रामजी अंबेडकर बीसवीं सदी के क्रांतिपुरुष, महानायक और महामानव थे जिन्होंने हिंदुस्तान के बहुजन समाज के तमाम दलितों, वंचितों और उपेक्षितों को उनके अधिकार दिलाकर उनके उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। उनकी पहचान संविधान निर्माता, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, शिक्षाविद, पत्रकार, मानवविज्ञानी, इतिहासविद और दार्शनिक के रूप में है। डॉ॰ अंबेडकर ने दलितों, आदिवासियों, श्रमिकों, किसानों, अल्पसंख्यकों और महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन चलाया।

अंबेडकरवाद से तात्पर्य है डॉ॰ भीमराव अंबेडकर की विचारधारा। अंबेडकरवाद को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि 'अंबेडकरवाद किसी भी धर्म, जाति या रंगभेद को नहीं मानता, अंबेडकरवाद मानव को मानव से जोड़ने या मानव को मानव बनाने का नाम है। अंबेडकरवाद वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर मानव के उत्थान के लिए किए जा रहे आंदोलन या प्रयासों का नाम है।'[1] अंबेडकरवाद वह विचारधारा है जिसमें जाति, संप्रदाय, नस्ल, लिंग आदि जन्मजात कारणों के चलते सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक शक्ति स्त्रोंतों के अधिकारों से बलात बेदखल कर अन्याय की खाई में धकेले गए मानव समुदायों को उन शक्तिस्रोतों में कानूनी भागीदारी दिलाने का विचार रखता है। अंबेडकरवाद की अवधारणा में–(1) स्वतंत्रता, (2) समानता, (3) भाईचारा, (4) मानवतावाद, (5) अहिंसा, (6) निरीश्वरवाद, (7) बुद्धिवाद, (8) वैज्ञानिक दृष्टिकोण व (9) धर्म, जैसी चीजों का अंतर्भाव किया जाता है।

अंबेडकरवाद से प्रभावित होकर समकालीन हिंदी कविता के क्षेत्र में ओमप्रकाश वाल्मीकि डॉ॰ धर्मवीर, सूरजपाल चौहान, जयप्रकाश कर्दम, तुलसीराम, असंघोष, डॉ॰ उमेशकुमार सिंह, कर्मानंद आर्य, मोहनदास नैमिशराय, डॉ॰ एन॰ सिंह, श्यौराजसिंह 'बेचैन', दयानंद बटोही, श्री माताप्रसाद, डॉ॰ सुशिला टाकभौरे, अरविंद भारती, हरदान हर्ष आदि कवि काव्य सृजन कर रहे हैं, इनकी कविताओं में डॉ॰ अंबेडकर की विचारधारा को देखा जा सकता है।

इस लेख में कवि–ओमप्रकाश वाल्मीकि, हरदान हर्ष, सूरजपाल चौहान, अरविंद भारती, अरविंद यादव, जयप्रकाश कर्दम, कँवल भारती और महादेव टोप्पो की कविताओं में डॉ॰ अंबेडकरवादी दर्शन की अभिव्यक्ति को देखा जा सकता है–

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता 'बस्स! बहुत हो चुका' में सदियों से वाल्मीकि समुदाय

ISSN 0975-735X

Scanned with CamScanner

जो दुःख यातनाओं को भोगता आया है, उसकी अभिव्यक्ति हुई है। कवि नहीं चाहता कि वाल्मीकि समुदाय अब इस तरह का अपमानित जीवन जिए। कवि ने हजारों सालों की यातनाएँ– झाड़ू, गंदगी-भरी बाल्टी और कनस्तर जैसे बिंबों के माध्यम से अभिव्यक्त की हैं। हजारों सालों से सफाईकर्मी समुदाय जिन पीड़ाओं और अपमान को भोगता आया है, उसका विचार आते ही दिल सिहर उठता है, मानो नस-नस में ठंडा ताप भर जाता है–

जब भी देखता हूँ मैं
झाड़ू या गंदगी से भरी बाल्टी
कनस्तर किसी हाथ में
मेरी रगों में दहकने लगते हैं
यातनाओं के कई हजार वर्ष एक साथ
जो फैले हैं आ धरती पर
ठंडे रेतकणों की तरह वे तमाम वर्ष
वृत्ताकार होकर घूमते हैं
करते हैं छलनी लगातार अंगुलियों और हथेलियों को
नस-नस में समा जाते हैं ठंडा-ताप।[2]

कवि हरदान हर्ष की कविता 'कोल्हू का बैल' में वर्ण व्यवस्था की शुरुआत से किस तरह अवर्ण समुदायों को सवर्ण समुदायों ने सहेतुक मानवीय अधिकारों से वंचित करके धर्म की आड़ लेकर गुलाम बनाया, उन्हें सेवा-टहल के कार्यों से जोड़कर किस तरह शिक्षा के अधिकार से वंचित कर उनकी तरक्की के रास्ते बंद कर दिए, इस पर विचार व्यक्त किए हैं। ब्राह्मणी व्यवस्था को भली-भाँति पता था कि यदि वृहद जनसमुदाय को अपने अधीन रखकर सेवा-टहल के काम करा लेने हो तो उन्हें गुलाम बनाना आवश्यक है और इसलिए वर्ण व्यवस्था का सहारा लेकर विशाल जनसमुदाय को शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया, उनमें चेतना निर्माण नहीं होने दी।

कोल्हू के बैल की आँखें ढाँप दी जाती हैं
जान-बूझकर इस मंशा के साथ कि कोल्हू में रहते हुए
वह कभी नहीं देख सके कुछ भी
उसको आँखें होकर भी नहीं हैं
ढँपी आँखें बंद रहें या खुली
उनमें नहीं पड़ पाता रोशनी का बीज किसी तरह![3]

डॉ॰ बाबासाहेब अंबेडकर का मूलमंत्र था–'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो।' बाबासाहब अक्सर कहा करते थे कि शिक्षा शेरनी का दूध है और जो इस दूध को पीएगा वह दहाड़ेगा। सूरजपाल चौहान की कविता 'पढ़ो' में यही संदेश दिया है। शिक्षा से बौद्धिक विकास होता है और बौद्धिक विकास होने पर व्यक्ति तर्क-वितर्क, बहस और प्रतिवाद करने लगता है। शिक्षा से निर्मित चेतना के चलते व्यक्ति सत्य तक पहुँचकर ही दम लेता है। सदियों से सवर्ण समुदाय ईश्वर, धर्म, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, कर्मफल जैसी चीजों का भय दिखाकर अवर्ण समुदायों का उत्पीड़न करता आया है। ऐसे फरेब और पाखंड से अवगत होने के लिए कवि दलित, उपेक्षित, और वंचित समुदाय से शिक्षा ग्रहण करने की अपील करते हुए लिखता है–

Scanned with CamScanner

खूब पढ़ो इतना कि ज्ञात हो जाए
तुम्हें मक्कारों की कलम की कलाबाजी
पढ़ो मनन करो तभी जान पाओगे
'कफन' के घीसू और माधव की सच्चाई
क्यों और कैसे उन्हें बना डाला लंपट और कामचोर
खूब पढ़ो और पढ़ते ही जाओ तभी जान पाओगे
परमात्मा, ईश्वर या इनके भगवानों के अश्लील कारनामे
पढ़ोगे तभी जान पाओगे कि इन्होंने हमारे नायकों और
वीरांगनाओं को छला है समय-समय पर प्रपंच रचकर।[4]

डॉ॰ बाबासाहेब अंबेडकर ने वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया था। उनके अनुसार एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत ईश्वर और धर्म के नाम पर वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था को मजबूत बनाया गया जिससे कि शूद्र और अतिशूद्र जातियों का शोषण किया जा सके। उनका मानना था कि प्राचीनकाल में भारतीय सामाजिक संरचना जो कि जाति आधारित, जन्माधारित और भाग्याधारित बनाने की कोशिशें की गई हैं इसके मूल में ब्राह्मणवादी विचारधारा रही है। डॉ॰ अंबेडकर का मानना था कि धर्म और जाति की प्रभुसत्ता के चलते ही ब्राह्मणवाद मजबूत होता गया और वर्ण-जाति-श्रेणी विभाजन को भारत की सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में सफल हुआ। अरविंद भारती इस ब्राह्मणवादी सोच द्वारा उपजी जाति व्यवस्था की मक्करी को बेनकाब करते हुए लिखते हैं–

माथे पे हमारे पूर्वजों के
कभी तुमने लिखा था अछूत
युग बदले पीढ़ियाँ बदलीं
पर नहीं बदला वो शब्द
सिर्फ शब्द होता तो
कब का मिट जाता या फिर मिटा दिया जाता
पर अपनी मक्कारी
झूठे अहंकार की खातिर तुमने बना दिया
उसे पहचान
बाँट दिया वर्गों में और बना दी जाति
फिर जाति में भी उपजाति
पहना दिया इन्हें सभ्यता और संस्कृति का लबादा।[5]

डॉ॰ अंबेडकर के लिए चिंता का मूल विषय था–देश में व्याप्त सामाजिक असमानता। उनका मानना था कि यह देश विभिन्न जातियों से मिलकर बना है। इन सभी जातियों का समाज में स्थान और विकास एक समान नहीं है। उनकी दृष्टि में आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी जातियाँ बुरी तरह से बाधित हैं। उन्होंने जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर किया जाने वाला भेद दूर करने के प्रयास किए। उन्होंने समता के मूल्य को बौद्ध दर्शन से अपनाया था। वे तत्कालीन भारत में फैली असमानता को श्रेणीगत असमानता मानते थे। उनके अनुसार ऐसी

ISSN 0975-735X

Scanned with CamScanner

असमानता समाज के ऊपरी पायदान के लोगों के प्रति सम्मान बढ़ाती है और निचले पायदान के लोगों प्रति अवमानना या अवहेलना बढ़ाती है। समाज में व्याप्त असमानता की वजह से ही हम आज भी देखते हैं कि यदि कोई दलित, आदिवासी या पिछड़े समुदाय से कोई व्यक्ति डी॰एम॰ या एस॰पी॰ बन जाए बावजूद इसके उसे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। जिस दृष्टि से किसी सवर्ण समाज के डी॰एम॰ या एस॰पी॰ को देखा जाता है। इसलिए डॉ॰ अरविंद यादव लिखते हैं–

आज जरूरी है तोड़ना
सदियों पुरानी उन दीवारों को
जो खड़ीं हैं मानव मानव के बीच
आज जरूरी है पाटना उन खाइयों को
जिन्होंने बढ़ा दी है दूरी मानव की मान से
आज जरूरी है खंडित करना उन मठ और गढ़ों को
जिन पर लहराती पताकाएँ धर्म और जाति की।[6]

अंबेडकरवाद की विशेषता है–बुद्धि प्रामाण्य और वैज्ञानिक सोच। कवि जयप्रकाश कर्दम दलित समुदायों को हरिजन कहने के पक्ष में नहीं है। चूँकि हरि अर्थात् ईश्वर होता तो सभी हरिजन होते, पर हकीकत में ऐसा नहीं है। ईश्वर की अवधारणा केवल काल्पनिक चीज है, जो सनातनी साहित्य की उपज है, जिसे शोषण के हथियार के रूप में प्रयोग में लाया गया। ईश्वर के अस्तित्व को विज्ञान ठुकराता है, चूँकि विज्ञान की कसौटियों पर ईश्वर आज तक खरा नहीं उतर पाया है, विज्ञान प्रमाण को स्वीकारता है और शास्त्र प्रमाण देने में असमर्थ हैं। अत: जो प्रमाण पर खरा नहीं उतरा वह सत्य नहीं माना जा सकता। इसीलिए कवि भी ईश्वर के अस्तित्व को झुठलाता है। इस संसार में जीव की निर्मिति दो विपरीत लिंगी जीवों के योग से होती है। यह वैज्ञानिक सच है। ईश्वर जैसी किसी चीज की इसमें कोई भूमिका नहीं है। इसलिए जयप्रकाश कर्दम कविता में लिखते हैं–

परमपिता है यदि हरि (ईश्वर)
और सब उसकी संतान हैं
तो क्यों नहीं है सब हरिजन?
क्यों कहा जाता है 'हरिजन' मुझे ही?
मैंने ईश्वर को नहीं देखा न उसे जानता हूँ
न मानता हूँ
मैं जानता हूँ अपने पिता को और अपनी माँ को
पैदा किया था जिसने मुझे अपनी कोख से
अपने माँ–बाप का जना मैं उनकी संतान हूँ
ईश्वर मेरा पिता नहीं मैं हरिजन नहीं हूँ।[7]

डॉ अंबेडकर मानवतावादी महापुरुष थे। उन्होंने मानवतावादी दृष्टिकोण को सामने रखकर ही सदियों से शोषित, प्रताड़ित, दबो–कुचले दलितों, आदिवासियों व पिछड़ी जातियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक उत्थान हेतु देश की आजादी के बाद संविधान में आरक्षण का प्रावधान किया। डॉ॰ अंबेडकर का मानवतावाद भूतयावाद से उत्पन्न नहीं था बल्कि उसे बुद्धि

Scanned with CamScanner

प्रामाण्य की बुनियाद भी थी। बाबासाहब का मानवतावाद बुद्ध के मानवतावाद से रिश्ता कायम करता है। बुद्ध का मानवतावाद अन्याय, अराजकता व विषमता के विरोध में न्याय, समता और शांति, करुणा, प्रज्ञा, स्वतंत्रता-बंधुत्व जैसे मूल्यों को समाज में स्थापित करना चाहता था, इन्हीं मूल्यों को डॉ॰ अंबेडकर ने अपनाकर उसे व्यापक स्तर पर स्थापित करने का आजीवन प्रयास किया। इसी विचार से प्रेरित होकर कँवल भारती ने 'बहिष्कार' नामक कविता में शोषण, गुलामी, असमानता, अन्याय, विभेद की भावना का बहिष्कार कर स्वतंत्रता, समानता, बंधुता जैसे मूल्यों की अभिव्यक्ति करते हुए लिखा है–

आइए, इसे नए वर्ष में स्वीकार करें
स्वतंत्रता, समानता और बंधुता को
न केवल चिंतन में, न केवल लेखन में
बल्कि व्यवहार में, आचरण में, संस्कार में
मनुष्य और देश के विकास के लिए
विघटन के समूल नाश के लिए।[8]

डॉ॰ अंबेडकर धर्म की श्रेष्ठता की पड़ताल की कसौटी नैतिकता को मानते थे, जिसे वह अपने अनुयायियों में बढ़ावा देता है। इस दृष्टि डॉ॰ अंबेडकर हिंदू धर्म को कमजोर पाते हैं चूँकि वह पदक्रम, असमानता व अछूत प्रथा को वैध ठहराता है। इसीलिए उन्होंने हिंदू धर्म का त्याग करते हुए 14 अक्तूबर, 1956 में अपने हजारों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। उनके अनुसार बौद्ध धर्म नैतिक धर्म है चूँकि वह जाति, लिंग व प्रजाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में भेद नहीं करता। बौद्ध धर्म हमेशा नीची जातियों के लोगों व महिलाओं का बौद्ध संघों में स्वागत करता आया है।

अरविंद भारती इसी विचारधारा से प्रभावित होकर लिखते हैं। वंचित, उपेक्षित व दलित पिछड़े तबकों पर हजारों सालों से हिंदूधर्म के संस्कार अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। हिंदू समाज में जाति जन्म के साथ जुड़ जाती है और जीवन के अंतिम पल तक व्यक्ति के साथ जुड़ी रहती है। लाख कोशिशें करने के बावजूद भी जाति से व्यक्ति मुक्त नहीं हो पाता। इसलिए कवि जाति को बनाने वाले धर्म रूपी पेड़ को हमेशा-हमेशा के लिए उखाड़ फेंकने की बात पर बल देते हुए लिखता है–

धर्म के पेड़ पर उगती हैं जातियाँ
तना, शाखाओं, पत्तियों सी फैलती हैं जातियाँ
कितना भी काटो शाखाओं को काटने से
नहीं कट पाती हैं जातियाँ
करनी हैं अगर तुमको खत्म ये जातियाँ
जड़ में मट्ठा डाल उखाड़ फेंकना होगा धर्म के पेड़ को।[9]

महादेव टोप्पो आदिवासी कविता का जाना माना नाम है। उनकी 'त्रासदी' शीर्षक से लिखी कविता भारतीय समाज में किस तरह जातियों में बाँटकर मानव मानव के बीच भेद पैदा किया है, इस पर प्रकाश डालती है। भारतीय समाज में विडंबना यह है कि यहाँ किसी सवर्ण के घर पर पशुओं को इज्जत मिलती है किंतु मानव को पशु से भी निम्न और गया गुजरा समझा जाता

ISSN 0975-735X

Scanned with CamScanner

है, उसे आदमी हरगिज नहीं समझा जाता इसलिए कवि लिखता है–

इस देश में पैदा होने का मतलब है
आदमी का जातियों में बँट जाना
और गलती से तुम अगर हो गए पैदा जंगल में
तो तुम कहलाओगे आदिवासी-वनवासी-गिरिजन
वगैरह-वगैरह आदमी तो कम से कम कहलाओगे नहीं।[10]

संक्षेप में भारत के उपेक्षित, वंचित, दलित एवं आदिवासी पशुवत जीवन जी रहे थे, जिन्हें कथित सवर्ण समुदाय द्वारा मुख्य धारा से अलग-थलग कर दिया था, उन्हें डॉ॰ बाबासाहेब अंबेडकर के रूप में मसीहा मिल गया था। डॉ॰ बाबासाहब ने इन समुदायों के उत्थान के लिए आजीवन यहाँ की मनुवादी व्यवस्था से लोहा लिया और अंततः देश की आजादी के बाद उक्त समुदायों के लिए संविधान में आरक्षण दिलाकर उन्हें गरिमा एवं सम्मानजनक स्थान दिलाया। परवर्तीकाल में डॉ॰ अंबेडकर के विचारों को आगे बढ़ाने का काम उपर्युक्त कवियों द्वारा कविताओं के माध्यम से किया जा रहा है।

संदर्भ

1. https://www.samajweekly.com/ अंबेडकरवाद क्या है?
2. सं॰ रमणिका गुप्ता, युद्धरत आम आदमी (कविता–बस्स! बहुत हो चुका, ओमप्रकाश वाल्मीकि), पूर्णांक 101, विशेषांक, 2009, पृ॰ 123
3. सं॰ तेजसिंह, अपेक्षा (कविता–कोल्हू का बैल, हरदान हर्ष), जुलाई-दिसंबर, 48-49, संयुक्तांक, 2014 पृ॰ 59-60
4. सं॰ रमणिका गुप्ता, युद्धरत आम आदमी (कविता–पढ़ो, सूरजपाल चौहान), अंक 101, जनवरी-मार्च, 201, पृ॰ 61
5. सं॰ जयप्रकाश कर्दम, दलित साहित्य वार्षिकी, 2014 (अरविंद भारती की कविताएँ, अरविंद भारती), अंक 14, वर्ष 2016, पृ॰ 347
6. संपादक मंडल असंगघोष, शिवनाथ चौधरी, तीसरा पक्ष, (कविता–आज जरूरी है, डॉ॰ अरविंद यादव) संयुक्तांक 38-39, जनवरी-जून, 2017
7. सं॰ रमणिका गुप्ता, युद्धरत आम आदमी (कविता–मैं हरजिन नहीं हूँ, जयप्रकाश 'कर्दम'), पूर्णांक 101, विशेषांक, 2009, पृ॰ 138
8. http://kavitakosh.org/kk// बहिष्कार, कँवल भारती
9. सं॰ जयप्रकाश कर्दम, दलित साहित्य वार्षिकी, 2014 (अरविंद भारती की कविताएँ, अरविंद भारती), अंक 14, वर्ष 2016, पृ॰ 348
10. सं॰ रमणिका गुप्ता, आदिवासी स्वर और नई शताब्दी (कविता–त्रासदी, महादेव टोप्पो), वाणी प्रकाशन द्वितीय संस्करण, 2008 पृ॰ 49

मो॰ 98814 40316
ईमेल : nainwaosk@gmail.com

Scanned with CamScanner